प्राचीन भारत का विश्वकोष 'अर्थशास्त्र'

अनुराधा विनायक
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत

प्राप्त तिथि–09.05.2015, स्वीकृत तिथि–17.07.2015

भारतीय सभ्यता–संस्कृति का इतिहास घटना प्रधान न होकर विचार प्रधान रहा है, जिसके प्रवाह में निरन्तरता बनी रही है। अनुकूल–प्रतिकूल सभी प्रकार की परिस्थितियों में एकमात्र विचारों की धारा सतत प्रवहमान् रही जिसका प्रभाव विशाल भूमण्डल पर आज भी विद्यमान है। इतिहास निर्माण के क्षेत्र में लिखने की आधार सामग्री को साहित्यिक सामग्री की संज्ञा प्रदान की जाती है जो दो रूपों में उपलब्ध होती है–

1. इतिहासेतर।
2. इतिहास परक।

इतिहासेतर सामग्री वेदों में सुरक्षित है। इतिहास परक सामग्री में ब्राह्मण ग्रन्थ, बौद्ध त्रिपिटक, जैन ग्रन्थ, पाषिनी की अष्टाध्यायी पतंजलि का महाभाष्य, पुराज, रामायण, महाभारत समस्त मानवता के विकास क्रम को बताने वाले बहूमूल्य प्रयत्न हैं। इतिहास गणना के भारतीय दृष्टिकोण में सर्वाधिक उल्लेखनीय चन्द्रगुप्त मौर्य (321–297 ई0पू0) के महामंत्री कौटिल्य के अर्थशास्त्र को माना जाता है। प्राचीन भारत के विश्वकोष के रूप में इसको जाना जाता है। राजतंत्र और इसके संचालन के बारे में मुख्य स्रोत सामग्री है अर्थशास्त्र कई सदियों तक पूर्णतः लुप्त रहने के बाद 1905 में पुनः खोजा गया यह संस्कृत ग्रन्थ अपने में बृहद निधि संजोये हुये है। इसके लेखक चाणक्य या कौटिल्य नामक ब्राह्मण थे। इस मूल ग्रन्थ का काफी अंश पंचमाश से चतुर्थांश तक नष्ट हो गया है। पूरा कोई प्रकरण गायब नहीं है। प्रतिलिपियाँ तैयार करते समय अधिकरण (खण्ड) में छोटे–छोटे अंश छूट गये हैं। अर्थशास्त्र का अर्थ है, "आर्थिक लाभ का शास्त्र" व्यक्ति के नहीं एक विशेष प्रकार के राज्य के आर्थिक लाभ का शास्त्र । प्राचीन भारत के संघ राज्यों का विशद इतिहास बताने में 'अर्थशास्त्र' ही एकमात्र आधार है। ये संघ राज्य आधुनिक प्रजातंत्र की परम्परा के आधार स्तम्भ थे। अर्थ शास्त्र में राजतंत्र के सिद्धान्तों का विवरण है। "यह ग्रन्थ, पूर्वाचार्यों की राजतंत्र–विषयक विविध कृतियों को देखने के बाद, समस्त पृथ्वी पर स्थापित करने और इस पर शासन करने के उद्देश्य से रचा गया है [1] (पृथिव्या लाभे पालने चा यावन्त्यर्थशास्त्राषि पूर्वाचार्यैः प्रस्ताविढानि प्रायशस्तानि संहृत्यैकमिदमर्मशास्त्रं कृतम्। – अर्थशास्त्र 1.1.1)

अर्थशास्त्र में वर्णित शासक वर्ग का महत्व दृष्टिगोचर होता है जिनमें उच्च और निम्न अधिकारी वर्ग थे। ये राज्य के मुख्य आधार स्तम्भ थे। अधिकारी वर्ग के दोनों भाग संख्या की दृष्टि से भी बहुत बड़े थे। अर्थशास्त्र में विशाल स्तर पर गुप्तचरों का उपयोग करने का सुझाव प्रस्तुत किया गया है जिसका उद्देश्य था राज्य को सुरक्षा और लाभ। गुप्तचरों को अपनी आवश्कता की पूर्ति हेतु किसी भी प्रकार का व्यवहार करने की स्वतन्त्रता थी परन्तु मूल में राज्य की सुरक्षा को ही सर्वोपरि माना जाता था जिससे राज्य सुदृढ़ हो एवं प्रशासनिक ढाँचा सुचारू रूप से कार्य करता रहे।

अर्थशास्त्र के वर्णन के अनुसार राज्य का सर्वोच्च अधिनायक राजा था। इसमें वर्णित राजा अपने राज्य का सर्वाधिक व्यस्त व्यक्ति होता था। राजा को विष प्रयोग और हत्यारे से बचने के लिए बहुत बन्दोबस्त रखना पड़ता था। राजा में असाधारण गुणों का होना आवश्यक बताया गया है। राजा की सहायतार्थ मन्त्री–परिषद राजकोष और सेना के प्रधान होते थे। अर्थशास्त्र में पूर्ववर्ती आचार्यों के विविध मतों पर निष्पक्षता से विचार–विमर्श किया गया है–

1. राजपुत्र की शिक्षा के उपाय, 2. राजपुत्र की महत्वाकांक्षा की परीक्षा, 3. राजपुत्र के दुर्गुणों का पता लगाना, 4. नियन्त्रण करना या पदच्युत करना। उपरोक्त सभी बिन्दुओं पर विस्तार से विवेचना की गई है जिससे राज्य को कोई हानि न हो। अर्थशास्त्र में राज्य के सुनियोजित होने का विवरण उपलब्ध होता है। अर्थशास्त्र के ग्यारहवें अधिकरण में कबीलों के नेताओं को भ्रष्ट करने, उनमें परस्पर फूट डालने की कोशिशों को सफल बनाने के लिये चर्चा की गई है। आन्तरिक स्तर पर राजा के प्रतिनिधियों द्वारा कबीलों में सही बँटवारों को लेकर माँग करने की स्थिति को उकसाने की प्रक्रिया पर बल दिया गया है। जिससे कबीले पर कब्जा किया जा सके। अर्थशास्त्र में लिच्छवियों को नष्ट करने के लिये अजातशत्रु के ब्राह्मण मंत्री

वस्सकार द्वारा लिच्छवियों के विरूद्ध उपाय किये जाने का उल्लेख मिलता है। प्रशासन की एक इकाई जनपद भी आधुनिक जिले के समान समझी जा सकती है। प्रत्येक जनपद में एक सी शासन व्यवस्था थी। सर्वोच्च अधिकारी राजा के मन्त्री होते थे, इनके नीचे अधिकारियों की एक परिषद होती थी। चुनाव के समय इनकी बुद्धिमत्ता, साहस, निष्ठा, ईमानदारी तथा स्वामीभक्ति की परीक्षा होती थी। प्रत्येक अधिकरी के पूरे कार्यकाल में उसकी गतिविधियों पर गुप्त रूप से नजर रखी जाती थी। अधिकारी तन्त्र का निम्न छोर या कड़ी शहर अथवा गाँव के प्रत्येक मुहल्ले तक पहुँचता था। जिसका सरक्षक गोप कहलाता था जो अपने क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति के जन्म–मृत्यु तथा आवागमन का पूरा ब्योरा रखता था। व्यापारी सार्थ में गुप्तचर होते थे।

जनपद की भूमि के दो स्पष्ट वर्ग थे–

1. राष्ट्र– राजस्ववाली भूमि।
2. जोती जाने वाली सीता भूमि।

कर निर्धारण उपज का छठा हिस्सा होता था। राज्य उद्यानों पर भी कर लेता था। राजा को भेंट उपहार देने की पारम्परिक प्रथा से बलि कर का विकास हुआ। कृषि अन्य भूमि में सीता भूमि का भाग बहुत बढ़ा हुआ था। यह भूमि जोतने वाले को उसके जीवन भर के लिये दी जाती थी। तत्पश्चात उसके उत्तराधिकारियों को दी जाती थी। लम्बी अवधि के लिये कृषि भूमि के खाली हो जाने पर, राज्य भूमि मंत्री सीताध्यक्ष उसे जोतने की व्यवस्था करता था। सीता भूमि में किसी प्रकार के सभा–समूह के आयोजन की अनुमति नहीं थी। चाणक्य के वर्णन के अनुसार– "ग्रामवासियों की निराक्षयता से और पुरूषों के अपने काम में जुटे रहने से ही राजकोष, बेगारी के श्रम(विष्टि), धान्य, तैल आदि की वृद्धि होती है।[2]

अर्थशास्त्र में अन्तर्राष्ट्रीय गठबन्धन, युद्ध, विष–प्रयोग, विद्रोह को प्रोत्साहन देना इत्यादि का वर्णन है। सन्धियाँ संविधानुसार तोड़ी जा सकती थी अर्थशास्त्र के राज्य में खनिकर्म तथा सिंचाई व्यवस्था उच्च स्तर की थी। इसी प्रकार पुण्य संग्रह सम्बन्धी सभी प्रक्रियाओं का पूरा विवरण दिया गया है। राज्य के प्रत्येक कर्मचारी को नकद वेतन मिलता था।[3] सबसे अधिक वेतन–प्रतिवर्ष 48,000 पण(चाँदी का सिक्का) राजा के पुरोहित, मंत्री राजमहिसी, राजमाता, युवराज, सेनापति को दिया जाता था। सबसे कम वेतन– प्रतिवर्ष 60 पण सैनिकों तथा मजदूरों को मिलता था। यह वेतन प्रतिमाह 17.5 ग्राम चाँदी के तुल्य था। बढ़इयों और शिल्पियों को राज्य की ओर से 120 पण वेतन मिलता था। प्रशिक्षित पदाति को 500 पण वेतन मिलता था। कुशल अभियन्ता को 1000 पण मिलते थे। अर्थशास्त्र का पण चाँदी का था। राज्य के एकाधिपत्य के बारे में चाणक्य के विचार हैं– "राजकोष का स्रोत खनिकर्म में है और सेना का स्रोत राजकोष में। जिसके पास कोष और सेना है वह सारी पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर सकता है।" अर्थशास्त्र के एक प्रामाणिक अनुवाद की अनुक्रमणिका में अर्थदण्डों की सूची साढ़े नौ कालमों में दी गई है। गणिका वृत्ति के लिये नियमपण्य व्यापार सेवाओं की ही भांति थे। एक सीमा तक धन अर्जित करने के उपरान्त गणिकायें अपना पेशा त्यागकर सम्भ्रान्त जीवन व्यतीत कर सकती थीं। वयोवृद्धा गणिका राज्य की सेवा में अधीक्षिक(मातृका) भी बन सकती थी। वस्तुतः यह चित्र तत्कालीन समाज में स्त्रियो की सुरक्षा और सम्मान पर प्रचुर प्रकाश डालता है। यहाँ तक वर्णन प्राप्त होता है कि दास के बच्चे भी स्वतंत्र होते थे, उन्हें बेचा नहीं जा सकता था। कोई भी दास स्त्री या पुरूष अपने श्रम की वैधानिक मूल्य में गणना करके अपनी स्वतंत्रता खरीद सकता था।

अतएव यह सुस्पष्ट है कि 'अर्थशास्त्र' का महत्व केवल चन्द्रगुप्त मौर्य के इतिहास का ही वर्णन मात्र नहीं करता वरन संस्कृत साहित्य तथा समस्त भारतीय वाङमय को प्रभावित करता हुआ भी दृष्टिगोचर होता है। एक बृहत्तर राष्ट्र के निर्माण और संचालन के लिये आवश्यक समस्त बिन्दुओं पर कौटिल्य ने विस्तार पूर्वक विचार किया है। इसके साथ ही भारत की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और प्रशासनिक व्यवस्था का विशद निरूपण भी हुआ है। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' के हस्तलेख को खोज निकालने और उस पर प्रामाणिक प्रकाश डालने का श्रेय आचार्य शाम शास्त्री को है। इस के माध्यम से भारतीय जन–जीवन का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। "अर्थशास्त्र" को आज भी भारतीय अर्धविद्या का एकमात्र ग्रन्थ माना गया है।

संदर्भ

1. शास्त्री, आर0 शाम(आचार्य)(अनुवादक) "कौटिल्य का अर्थशास्त्र" ।
2. जयचन्द्र विद्यालंकार(1933) भारतीय इतिहास की रूपरेखा, प्रयाग।
3. वाचस्पति गैरोला(1973) भारतीय संस्कृति और कला, उ0प्र0 ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ।
4. कौशाम्बी, डी0 डी0(1977) प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. उपाध्याय, रामजी(1966) प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, इलाहाबाद, उ0प्र0।
6. शर्मा, मनमोहन लाल(1967) भारतीय संस्कृति और साहित्य, अजमेर, राजस्थान।
7. मुखर्जी, राधा कुमुद(अनुवादक, 1962) चन्द्रगुप्त मौर्य और उसका काल, दिल्ली।